।। ॐ गुरू।।

भजन - आकाशगंगा में जब तक

आकाशगंगा में जब तक सितारे रहे
मेरे सदगुरू तेरी जिंदगानी रहे, जिंदगानी रहे
गुरूदेवा ओ गुरूदेवा गुरूदेवा ओ गुरूदेवा
ज्ञान अपने गुरू से जो पाया उसको घर घर में जाकर लुटाया
पूजा मन से करे सेवा तन से करे अपने जीवन की हस्ती बनाते रहे
बनाते रहे गुरूदेवा ओ गुरूदेवा
भार भूमि का तुमने उठाया विश्वशांति का बिगुल बजाया
विश्वशांति का शंख बजाया
सबको समझे परिवार चाहे नर हो या नार
जो भी आया शरण में उठाते रहे
उठाते रहे गुरूदेवा ओ गुरूदेवा
छोड़ वैकुंठ को जग में वो आये अपनी प्रभुता और वैभव भुलाए
लीला ऐसी करे जैसे मानव लगे ईश्वर होके भी बापू कहाते रहे
कहाते रहे गुरूदेवा ओ गुरूदेवा
दीनदुखियों के तुम हो सहारे विश्व बगिया के तुम रखवारे
कहते सत्यवचन व्यर्थ हो ना जनम हर जनम गुरू तुमको पाते रहे
तुमको पाते रहे गुरूदेवा ओ गुरूदेवा
इनको गुरूवर कहो चाहे ईश्वर इनको नश्वर कहो या तो रघुवर
ब्रह्मज्ञानी वहीं अंर्तयामी वहीं सभी रूपों में भगवान आते रहे
आते रहे गुरूदेवा ओ गुरूदेवा
अपनी सूरत हृदय में बसा दो प्रीत करने की रीति सीखा दो
करके चरणों का ध्यान पाए भक्ति और ज्ञान
गुरूभक्ति में मन को मिटाते रहे
मिटाते रहे गुरूदेवा ओ गुरूदेवा
ज्योत गुरूवर से जिसने जलाई उसके जीवन में खुशिया ही छाई
दुख में रोए नहीं सुख में सोये नहीं
अपनी नईया किनारे लगाते रहे
लगाते रहे गुरूदेवा ओ गुरूदेवा

सच्चें शिष्य के लिए तो गुरू वचन माने कानून

तुमने लाखों की बिगड़ी बनाई
ज्ञान–ज्योति हृदय में जगाई
है वो सबसे दयाला, बड़े हृदय विशाल
अपनी करूणा वो सबपे लुटाते रहे
लुटाते रहे सांई ओ मेरे सांई
गंगा जैसे निर्मल मेरे सांई
करते सबपे दया दृष्टि मेरे सांई
हरने भूमि का भार हुआ उनका अवतार
पार भक्तों की नैया लगाते रहे
लगाते रहे सांई ओ मेरे सांई
मेरे ईश्वर करू तुमसे विनंती
हर जनम में मिले मुझको भक्ति
कभी टूटे न तार रोज होवे दीदार
हर जनम में मुझे गुरू भक्ति मिले
गुरूभक्ति मिले सांई ओ मेरे सांई
आकाशगंगा में जब तक सितारे रहे
मेरे सदगुरू तेरी जिंदगानी रहे, जिंदगानी रहे
सांई ओ मेरे सांई

जो मनुष्य परमात्मा के दो अक्षरवाले नाम हरि का उच्चारण करते हैं, वे उसके उच्चारणमात्र से मुक्त हो जाते है, इसमे शंका नहीं है।